रविवार 23 मई, 2021

विषय — आत्मा और शरीर

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता **19 : 7**

"यहोवा की व्यवस्था खरी है।"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता **34: 1-4**
नीतिवचन **16: 17**

1 मैंहर समय यहोवा को धन्य कहा करूंगा; उसकी स्तुति निरन्तर मेरे मुख से होती रहेगी।
2 मैं यहोवा पर घमण्ड करूंगा; नम्र लोग यह सुनकर आनन्दित होंगे।
3 मेरे साथ यहोवा की बड़ाई करो, और आओ हम मिलकर उसके नाम की स्तुति करें।
4 मैं यहोवा के पास गया, तब उसने मेरी सुन ली, और मुझे पूरी रीति से निर्भय किया।
17 बुराई से हटना सीधे लोगों के लिये राजमार्ग है, जो अपने चाल चलन की चौकसी करता, वह अपने प्राण की भी रक्षा करता है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. व्यवस्थाविवरण 6 : 4, 5

4 हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है;
5 तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना।

2. नीतिवचन 15 : 32

32 जो शिक्षा को सुनी-अनसुनी करता, वह अपने प्राण को तुच्छ जानता है, परन्तु जो डांट को सुनता, वह बुद्धि प्राप्त करता है।

3. व्यवस्थाविवरण 4 : 1 (से *6th* ,), 2, 9 (से :), 29-31, 35

1 अब, हे इस्राएल, जो जो विधि और नियम मैं तुम्हें सिखाना चाहता हूं उन्हें सुन लो, और उन पर चलो; जिस से तुम जीवित रहो, और जो देश तुम्हारे पितरों का परमेश्वर यहोवा तुम्हें देता है उस में जा कर उसके अधिकारी हो जाओ।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

2 जो आज्ञा मैं तुम को सुनाता हूं उस में न तो कुछ बढ़ाना, और न कुछ घटाना; तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की जो जो आज्ञा मैं तुम्हें सुनाता हूं उन्हें तुम मानना।

9 यह अत्यन्त आवश्यक है कि तुम अपने विषय में सचेत रहो, और अपने मन की बड़ी चौकसी करो, कहीं ऐसा न हो कि जो जो बातें तुम ने अपनी आंखों से देखीं उन को भूल जाओ, और वह जीवन भर के लिये तुम्हारे मन से जाती रहे।

29 परन्तु वहां भी यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा को ढूंढ़ोगे, तो वह तुम को मिल जाएगा, शर्त यह है कि तुम अपने पूरे मन से और अपने सारे प्राण से उसे ढूंढ़ो।

30 अन्त के दिनों में जब तुम संकट में पड़ो, और ये सब विपत्तियां तुम पर आ पड़ेंगी, तब तुम अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो और उसकी मानना;

31 क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा दयालु ईश्वर है, वह तुम को न तो छोड़ेगा और न नष्ट करेगा, और जो वाचा उसने तेरे पितरों से शपथ खाकर बान्धी है उसको नहीं भूलेगा।

35 यह सब तुझ को दिखाया गया, इसलिये कि तू जान रखे कि यहोवा ही परमेश्वर है; उसको छोड़ और कोई है ही नहीं।

4. यहेजकेल 1 : 1 (*हो गई*), 3 (*से 1st ,*)

1 अब यह हुआ...

3 यहोवा का वचन यहेजकेल के पास पहुचा।

5. यहेजकेल 2 : 3 (*से* :), 4-6 (*से 4th ,*)

3 और उसने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, मैं तुझे इस्राएलियों के पास अर्थात बलवा करने वाली जाति के पास भेजता हूँ, जिन्होंने मेरे विरुद्ध बलवा किया है; उनके पुरखा और वे भी आज के दिल तक मेरा अपराध करते चले आए हैं।

4 इस पीढ़ी के लोग जिनके पास मैं तुझे भेजता हूँ, वे निर्लज्ज और हठीले हैं;

5 और तू उन से कहना, प्रभु यहोवा यों कहता हे, इस से वे, जो बलवा करने वाले घराने के हैं, चाहे वे सुनें व न सुनें, तौभी वे इतना जान लेंगे कि हमारे बीच एक भविष्यद्वक्ता प्रगट हुआ है।

6 और हे मनुष्य के सन्तान, तू उन से न डरना; न तो उनके वचनों से डरना।

6. यहेजकेल 18 : 4 (*से* :), 27 (जब), 30, 31 (*से* :), 32 (इसलिये)

4 देखो, सभों के प्राण तो मेरे हैं; जैसा पिता का प्राण, वैसा ही पुत्र का भी प्राण है; दोनों मेरे ही हैं।

27 ... जब दुष्ट अपने दुष्ट कामों से फिर कर, न्याय और धर्म के काम करने लगे, तो वह अपना प्राण बचाएगा।

30 प्रभु यहोवा की यह वाणी है, हे इस्राएल के घराने, मैं तुम में से हर एक मनुष्य का न्याय उसकी चालचलन के अनुसार ही करूंगा। पश्चात्ताप करो और अपने सब अपराधों को छोड़ो, तभी तुम्हारा अधर्म तुम्हारे ठोकर खाने का कारण न होगा।

31 अपने सब अपराधों को जो तुम ने किए हैं, दूर करो; अपना मन और अपनी आत्मा बदल डालो! हे इस्राएल के घराने, तुम क्यों मरो?

32 ... इसलिये पश्चात्ताप करो, तभी तुम जीवित रहोगे।

7. मीका 6 : 8

8 हे मनुष्य, वह तुझे बता चुका है कि अच्छा क्या है; और यहोवा तुझ से इसे छोड़ और क्या चाहता है, कि तू न्याय से काम करे, और कृपा से प्रीति रखे, और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले?

8. मत्ती 4 : 23

23 और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बल्ता को दूर करता रहा।

9. मत्ती 5 : 2, 17-20

2 और वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा,

17 यह न समझो, कि मैं व्यवस्था था भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं।

18 लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूं, क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा।

19 इसलिये जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगों को सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहलाएगा; परन्तु जो कोई उन का पालन करेगा और उन्हें सिखाएगा, वही स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा।

20 क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि यदि तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर न हो, तो तुम स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश करने न पाओगे॥

10. लूका 12 : 1 (खबरदार), 2, 4, 5

1 कि फरीसियों के कपटरूपी खमीर से चौकस रहना।

2 कुछ ढपा नहीं, जो खोला न जाएगा; और न कुछ छिपा है, जो जाना न जाएगा।

4 परन्तु मैं तुम से जो मेरे मित्र हो कहता हूं, कि जो शरीर को घात करते हैं परन्तु उसके पीछे और कुछ नहीं कर सकते उन से मत डरो।

5 मैं तुम्हें चिताता हूं कि तुम्हें किस से डरना चाहिए, घात करने के बाद जिस को नरक में डालने का अधिकार है, उसी से डरो: वरन मैं तुम से कहता हूं उसी से डरो।

11. लूका 13 : 10-14 (से *2nd* ,), 15 (से *2nd* ,), 16 (चाहिए), 17, 20, 21

10 सब्त के दिन वह एक आराधनालय में उपदेश कर रहा था॥

11 और देखो, एक स्त्री थी, जिसे अठारह वर्ष से एक र्दुबल करने वाली दुष्टात्मा लगी थी, और वह कुबड़ी हो गई थी, और किसी रीति से सीधी नहीं हो सकती थी।

12 यीशु ने उसे देखकर बुलाया, और कहा हे नारी, तू अपनी दुर्बलता से छूट गई।
13 तब उस ने उस पर हाथ रखे, और वह तुरन्त सीधी हो गई, और परमेश्वर की बड़ाई करने लगी।
14 इसलिये कि यीशु ने सब्त के दिन उसे अच्छा किया था, आराधनालय का सरदार रिसयाकर लोगों से कहने लगा, छ: दिन हैं, जिन में काम करना चाहिए, सो उन ही दिनों में आकर चंगे होओ; परन्तु सब्त के दिन में नहीं।
15 यह सुन कर प्रभु ने उत्तर देकर कहा;
16 ... क्या उचित न था, कि यह स्त्री जो इब्राहीम की बेटी है जिसे शैतान ने अठारह वर्ष से बान्ध रखा था, सब्त के दिन इस बन्धन से छुड़ाई जाती?
17 जब उस ने ये बातें कहीं, तो उसके सब विरोधी लज्ज़ित हो गए, और सारी भीड़ उन महिमा के कामों से जो वह करता था, आनन्दित हुई॥
20 उस ने फिर कहा; मैं परमेश्वर के राज्य कि उपमा किस से दूं?
21 वह खमीर के समान है, जिस को किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे में मिलाया, और होते होते सब आटा खमीर हो गया॥

12. 1 कुरिन्थियों 5 : 6 (जानना), 7 (से *2nd* ,), 8

6 क्या तुम नहीं जानते, कि थोड़ा सा खमीर पूरे गूंधे हुए आटे को खमीर कर देता है।
7 पुराना खमीर निकाल कर, अपने आप को शुद्ध करो: कि नया गूंधा हुआ आटा बन जाओ।
8 सो आओ हम उत्सव में आनन्द मनावें, न तो पुराने खमीर से और न बुराई और दुष्टता के खमीर से, परन्तु सीधाई और सच्चाई की अखमीरी रोटी से॥

13. 1 कुरिन्थियों 3: 16, 18, 19 (से *1st*.)

16 क्या तुम नहीं जानते, कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?
18 कोई अपने आप को धोखा न दे: यदि तुम में से कोई इस संसार में अपने आप को ज्ञानी समझे, तो मूर्ख बने; कि ज्ञानी हो जाए।
19 क्योंकि इस संसार का ज्ञान परमेश्वर के निकट मूर्खता है, जैसा लिखा है।

14. 1 थिस्सलुनीकियों 5 : 5, 6, 16-18 (से :), 19-21, 23, 24, 28

5 क्योंकि तुम सब ज्योति की सन्तान, और दिन की सन्तान हो, हम न रात के हैं, न अन्धकार के हैं।
6 इसलिये हम औरों की नाईं सोते न रहें, पर जागते और सावधान रहें।
16 सदा आनन्दित रहो।
17 निरन्तर प्रार्थना मे लगे रहो।
18 हर बात में धन्यवाद करो: क्योंकि तुम्हारे लिये मसीह यीशु में परमेश्वर की यही इच्छा है।
19 आत्मा को न बुझाओ।
20 भविष्यद्वाणियों को तुच्छ न जानो।
21 सब बातों को परखो: जो अच्छी है उसे पकड़े रहो।

23 शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे; और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें।

24 तुम्हारा बुलाने वाला सच्चा है, और वह ऐसा ही करेगा॥

28 हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता रहे॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 477 : 22-25

आत्मा ही मनुष्य का पदार्थ, जीवन और बुद्धिमत्ता है, जो व्यक्तिगत है, लेकिन पदार्थ में नहीं। अंतर मन कभी भी आत्मा से हीन किसी भी चीज को प्रतिबिंबित नहीं कर सकता है।

2. 120 : 4-6

आत्मा या आत्मा, ईश्वर, अपरिवर्तनीय और शाश्वत है; और मनुष्य आत्मा, ईश्वर के साथ सह-अस्तित्व रखता है, क्योंकि मनुष्य ईश्वर की छवि है।

3. 9 : 17-24

क्या आप "अपने भगवान को अपने प्रभु और अपने सभी प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखते हैं"? इस आदेश में बहुत कुछ शामिल है, यहां तक कि सभी भौतिक संवेदना, स्नेह और पूजा का समर्पण भी। यह ईसाई धर्म का एल डोराडो है। इसमें जीवन का विज्ञान शामिल है, और केवल आत्मा के दिव्य नियंत्रण को मान्यता देता है, जिसमें आत्मा हमारा स्वामी है, और भौतिक अर्थ और मानव का कोई स्थान नहीं होगा।

4. 117 : 29-5

यीशु ने अपने शिष्यों को फरीसियों और सदूकियों के चरित्र से सावधान किया, जिन्हें उन्होंने मानवीय सिद्धांतों के रूप में परिभाषित किया। "लेवन, जिसे एक महिला ने लिया, और खाने के तीन उपायों में छिप गई, जब तक कि पूरी तरह से रिसाव नहीं हो गया, उसका दृष्टांत "इस आशय को व्यक्त करता है कि आध्यात्मिक रिसाव मसीह के विज्ञान और उसकी आध्यात्मिक व्याख्या को दर्शाता है, - एक उपर दूर तक चित्रण के केवल सनकी और औपचारिक अनुप्रयोगों।

5. 329 : 5-7

थोड़ा सा लेवन पूरे गांठ को काट देता है। क्रिश्चियन साइंस की थोड़ी सी समझ इस बात का सच साबित करती है कि मैं इसके बारे में कहता हूं।

6. 302 : 19-24

मनुष्य के पूर्ण, यहाँ तक कि पिता के रूप में भी पूर्ण होने का विज्ञान बताता है, क्योंकि आध्यात्मिक मनुष्य का आत्मा या मन, ईश्वर है, जो सभी का दिव्य सिद्धांत है, और क्योंकि यह वास्तविक व्यक्ति आत्मा के बजाय आत्मा के नियम द्वारा शासित है, न कि पदार्थ के तथाकथित नियमों द्वारा।

7. 28 : 1-8

फरीसियों ने ईश्वरीय इच्छा को जानने और सिखाने का दावा किया, लेकिन उन्होंने केवल यीशु के मिशन की सफलता में बाधा डाली। यहां तक कि उनके कई छात्र भी उनके रास्ते में खड़े थे। यदि मास्टर ने एक छात्र को नहीं लिया था और भगवान की अनदेखी सत्य सिखाया था, तो उसे क्रूस पर नहीं चढ़ाया जाता था। पदार्थ की समझ में आत्मा को धारण करने का दृढ़ संकल्प, सत्य और प्रेम का उत्पीड़न करने वाला है।

8. 196 : 11-18

"उससे डरें जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नष्ट करने में सक्षम हैं," यीशु ने कहा। इस पाठ का सावधानीपूर्वक अध्ययन से पता चलता है कि यहाँ आत्मा शब्द का अर्थ गलत अर्थ या भौतिक चेतना है। यह आदेश रोम के, शैतान का नहीं, ईश्वर का नहीं, बल्कि पाप से सावधान रहने की चेतावनी थी। बीमारी, पाप और मृत्यु जीवन या सत्य के सहवर्ती नहीं हैं। कोई कानून उनका समर्थन नहीं करता। उनकी सत्ता स्थापित करने के लिए ईश्वर के साथ उनका कोई संबंध नहीं है।

9. 451 : 2-4, 8-11

ईसाई वैज्ञानिकों को भौतिक दुनिया से बाहर आने और अलग होने के लिए धर्मत्यागी आदेश के निरंतर दबाव में रहना चाहिए।

क्रिश्चियन साइंस के छात्र, जो अपने पत्र के साथ शुरू करते हैं और आत्मा के बिना सफल होने के लिए सोचते हैं, या तो अपने विश्वास का जहाज़ बना लेंगे या दुखी हो जाएंगे।

10. 140 : 8-13, 16-18

जब हम ईश्वरीय प्रकृति को समझ लेते हैं और उसी रूप से प्रेम करते हैं, तो हम उस अनुपात को स्वीकार करेंगे और उसका पालन करेंगे, जो कि नगरपालिका से अधिक नहीं, बल्कि हमारे ईश्वर के सान्निध्य में आनन्दित होगा। तब धर्म हृदय का होगा, मस्तिष्क का नहीं।

हम आध्यात्मिक रूप से पूजा करते हैं, केवल इसलिए कि हम भौतिक रूप से पूजा करते हैं। आध्यात्मिक भक्ति ईसाई धर्म की आत्मा है।

11. 118 : 10-12

युग बीत जाते हैं, लेकिन सत्य का यह उत्थान कभी काम पर होता है। इसे त्रुटि के पूरे द्रव्यमान को नष्ट करना चाहिए, और इसलिए मनुष्य की आध्यात्मिक स्वतंत्रता में अनंत काल तक महिमामंडित किया जाना चाहिए।

12. 253 : 19-28

पदार्थ पाप या बीमारी के खिलाफ सही प्रयासों के लिए कोई विरोध नहीं कर सकता, क्योंकि यह जड़ता, नासमझी है। इसके अलावा, यदि आप अपने आप को रोगग्रस्त मानते हैं, तो आप शरीर से बाधा के बिना इस गलत विश्वास और कार्रवाई को बदल सकते हैं।

पाप, बीमारी, या मृत्यु के लिए किसी भी आवश्यक आवश्यकता पर विश्वास नहीं करना, जानना (जैसा कि आप जानना चाहते हैं) कि भगवान को कभी भी एक तथाकथित भौतिक कानून के लिए आज्ञाकारिता की आवश्यकता नहीं होती है, ऐसा कोई कानून मौजूद नहीं है।

13. 119 : 29 (ईसाई)-6

ईसाई विज्ञान आत्मा और शरीर के प्रतीत होने वाले संबंध को उलट देता है और शरीर को मन की सहायक बनाता है। इस प्रकार यह मनुष्य के साथ है, जो संयमशील मन का विनम्र सेवक है, हालांकि यह समझदारी को अन्यथा प्रकट करता है। लेकिन हम इसे कभी नहीं समझेंगे जबकि हम स्वीकार करते हैं कि आत्मा शरीर या मन में है, और वह आदमी गैर-बुद्धि में शामिल है। आत्मा या आत्मा, ईश्वर, अपरिवर्तनीय और शाश्वत है; और मनुष्य आत्मा, ईश्वर के साथ सह-अस्तित्व रखता है, क्योंकि मनुष्य ईश्वर की छवि है।

14. 223 : 3-12

जल्दी या बाद में हमें पता चलेगा कि मनुष्य की परिमित क्षमता के भ्रूण को इस भ्रम से मजबूर किया जाता है कि वह आत्मा के बजाय आत्मा के स्थान पर शरीर में रहता है।

पदार्थ आत्मा को व्यक्त नहीं करता है। ईश्वर अनंत सर्वव्यापी आत्मा है। यदि आत्मा सब कुछ है और हर जगह है, क्या और कहाँ है? याद रखें कि सत्य त्रुटि से अधिक है, और हम बड़े को कम में नहीं डाल सकते हैं। प्राण आत्मा है, और प्राण शरीर से अधिक है।

15. 60 : 29-6

आत्मा के पास आत्मा को प्राप्त करने के लिए अनंत संसाधन हैं, और खुशी अधिक आसानी से प्राप्त की जाएगी और हमारे रखने में अधिक सुरक्षित होगी, अगर आत्मा में मांग की जाए। अकेले उच्च आनंद अमर आदमी के को संतुष्ट कर सकते हैं। हम व्यक्तिगत समझदारी की सीमा के भीतर खुशी का संचार नहीं कर सकते। इंद्रियां वास्तविक आनंद नहीं देती हैं।

मानव के हित में अच्छाई बुराई पर अध्यात्म और पशु पर आधिपत्य होना चाहिए, या सुख कभी नहीं जीता जाएगा।

16. 125 : 12-16

जैसे-जैसे मानव विचार एक अवस्था से दूसरे चरण में बदलता है, दर्द और दर्द रहितता, दुःख और आनन्द, - भय से आशा और विश्वास से समझ तक, - दृश्य अभिव्यक्ति अंतिम रूप से मनुष्य द्वारा शासित होगी, भौतिक अर्थ से नहीं।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।